साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

हिन्दी के बिना राष्ट्र गूंगा है

डॉ०आनन्द कुमार यादव

नाम -डॉ०आनन्द कुमार यादव **जन्म**- 07 जून1979

पिता - श्री लच्छ्मी प्रसाद **माता**- श्रीमती ललता

शिक्षा- एम.एससी., बी.एड.,एम.ए.,पीएच.डी.(NET)

संप्रति - सहायक समन्वक(अध्यापक) BRC कमासिन, बांदा (उ०प्र०) 210125

14 सितम्बर 2016 ''हिन्दी दिवस'' के अवसर पर

राष्ट्र का सम्मान करना चाहिये,

निज धारा का मान करना चाहिये।

सीखिये भाषाएँ, बोली, सारे विश्व की,

राष्ट्रभाषा पर अभिमान करना चाहिये।

''हिन्दी के बिना राष्ट्र गूंगा है। भाषायी संकीर्णता कभी भी हमारे व्यवहार और विचारों की अभिव्यक्ति में बाधक नहीं होनी चाहिए।'' महात्मा गांधी जी

''हिंदी भारत की जन-जन की भाषा है अतः जनता के साथ सभी काम हिंदी में किया जाए।''
सन 1843-1844 में अंग्रेज विद्वान थॉमसन

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

''हिंदी शक्तिवान और समर्थ है, हिंदी भारत की भाषा है।''
मिस्टर बटर्वर्थ बेली तथा फ्रेडरिक जॉनशोर

''हिंदी दुनिया की महानतम भाषा है। भारत को समझने के लिए हिंदी ज्ञान अनिवार्य है।''
इंग्लैण्ड के विद्वान डॉ मे गेसर

''विश्व में कोई ऐसी विकसित एवं साहित्यिक भाषा नहीं है जो हिंदी की सुगमता से मुकाबला कर सके।''
फादर कामिल बुल्के

किसी भी देश की भाषा उसकी संस्कृतिक विरासत की संवाहक होती है। हमारा भारत देश भाषाओं की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध देश है। हिंदी भारत की राष्ट्र भाषा है, हिंदी विश्व भाषा है, भले ही आधिकारिक रूप से हिंदी को भारत में राष्ट्र भाषा तथा संयुक्त राष्ट्र में अधिकृत भाषा का दर्जा अभी तक प्राप्त न हुआ हो। आज न केवल हिन्दी हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा बन चुकी है अपितु विश्व भाषा बनने की ओर भी अग्रसर है। हिन्दी चूंकि सहज एवं सरल भाषा है और इसमें अन्य भाषाओं के शब्दों को अपना लेने की अद्भुत क्षमता विद्यमान है इसलिए यह सर्वग्राह्य है। आज हिंदी के लिए सौभाग्य का अवसर है जब देश के प्रधानमन्त्री तथा उनका मंत्री मंडल हिंदी प्रेमी व समर्थक हैं जिन्होंने कार्यालयों में हिंदी में काम प्रारम्भ कर दिया है और घोषणा की है कि संयुक्त राष्ट्र व विदेशी राजनीयकों से बातचीत में भी हिंदी का ही प्रयोग करेंगे। यह हिंदी के लिए सकारात्मक सन्देश है।

एक बात उन लोगों के लिए जो अंग्रेजी को विश्व भाषा बताते हैं ---अंग्रेजी दुनिया के केवल 40 देशों में ही बोली व समझी जाती है जबकि हिंदी 175 देशों में अपने पाँव पसार चुकी है। दुनिया के 160 देशों में तो अंग्रेजी की कोई पहचान ही नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की भाषा सूची में भी रुसी, स्पैनिज, फ्रेंच, डच, मंदारिन आदि में भी अंग्रेजी 12 वें पायदान पर है। विश्व के 175 देशों में हिंदी पढने, लिखने, सीखने बोलने की व्यवस्था है। हिंदी का शब्दकोष भी 250000 शब्दों का विशाल भण्डार है जो किसी एक भाषा का विश्व में सबसे बड़ा कोष है। अमेरिका में हावर्ड, पेन, मिशिगन, येल सहित 65 से अधिक विश्व विद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन व अनुसंधान जारी है। रूस में प्रारंभिक स्तर से विश्व विद्यालय स्तर तक हिंदी अध्यन जारी है। बल्गारिया, फ़िनलैंड, डेनमार्क,जापान, चीन, नेपाल,बांग्लादेश, पाकिस्तान, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबेगो, गुमाना,ब्रिटेन, जर्मनी, क्यूबा, कोरिया, किस-किस की करें सभी जगह के विश्व विधालयों में हिंदी के अध्यन केंद्र हैं। गीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तकों की पहुँच वहाँ भी घर-घर तक है। अनेकों हिंदी पत्रिकाएं सभी देशों से प्रकाशित हो रही हैं। विश्व हिंदी न्यास,

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, विश्व हिंदी समिति जैसी अनेक वैश्विक संस्थाएं विदेशों से ही संचालित हैं। रूस, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जापान, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, चीन, स्वीडन, नार्वे, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, हंगरी, हॉलैण्ड, आदि देशों ने अपने यहाँ हिंदी विश्व भाषा के रूप में स्वीकार किया और अपने यहाँ के नागरिकों को हिंदी पढने के लिए प्रेरित भी कर रहे हैं।

14 सितम्बर, 1949 को संविधान समिति की हिन्दी सभा ने एकमत से गहन विचार-विमर्श एवं चिंतन के बाद निर्णय लिया था कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। अतएव 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों, मिशनों में 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष ''हिन्दी दिवस'' के रूप में मनाया जाता है। आजादी के बाद के शुरूआती वर्षों में भले ही दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी का विरोध हुआ था लेकिन जैसे-जैसे राष्ट्र आगे बढ़ता गया, सम्पूर्ण देश के युवा सशस्त्र सेनाओं, अर्ध सैन्य बलों एवं केन्द्रीय नौकरियों में शामिल होते गए और हिन्दी फिल्मों की दीवानगी जैसे-जैसे भारवर्ष में बढ़ती गई, इसके साथ ही हिन्दी भाषा का भी न केवल प्रचार-प्रसार हुआ अपितु देश की सीमाओं से निकल यह सारे विश्व में छा गई। हिन्दी के महत्व को समझते हुए संभवत बहुत पहले ही कविराज रविन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि, ''भारतीय भाषाएं नदियां हैं परन्तु हिन्दी महानदी है। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि हिन्दी के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है।'' आज इन्हीं गुरूदेव की अनूठी रचना भारत का राष्ट्रगान बनकर हिन्दी की गौरव गाथा का गुणगान कर रही है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से लेकर आज तक हिन्दी ने अपने उत्थान एवं विकास में काफी प्रगति की है। हिन्दी में वार्तालाप करने में लोग अब गर्व महसूस करते हैं। उनमें स्वाभिमान की भावना का संचार होता है। आजादी से पहले एवं बाद में भी समय-समय पर हमारे विद्वानों, मनीषियों, कविओं और लेखकों ने हिन्दी में अद्वितीय रचनाएं प्रस्तुत की हैं और विभिन्न पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे अपनी महत्ती भूमिका निभाई है। मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है। हिन्दी हमारे स्वाभिमान एवं अस्मिता की भाषा है। हिन्दी भाषा सहजता, सुगमता, सुबोधता के कारण देश की ही नहीं वरन् विश्व भाषा बनने की ओर अगसर है। विदशों में आज ''इंडिया स्टडी सेंटर'' स्थापित किये जा चुके हैं ताकि वहां के नागरिक इस भाषा से परिचित होकर भारत से जुड़ सकें। पिछले कुछ महीनों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की विदेश यात्राओं के दौरान प्रवासी भारतीयों के सम्मेलनों में हिन्दी की भव्यता, उपयोगिता एवं प्रयोग बढ़-चढ़ कर देखने को मिलता रहा है। हिन्दी भाषा आज महज संवाद का माध्यम भर नहीं रह गई है बल्कि यह

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

हमारी पहचान बन चुकी है। बदलते समाज एवं व्यापक होती जरूरतों के बीच हिन्दी ने तेजी से अपने पंख पसारे हैं जो कि हिन्दी भाषा के विकास के लिए शुभ संकेत हैं। 'कम्प्यूटर एवं स्मार्ट फोन' में हिन्दी के एप्पलिकेशन आ जाने से अब हिन्दी टंकण बच्चों, महिलाओं एवं युवाओं के बीच तेजी से लोकप्रिय होता जा रहा है। वैश्वीकरण की आवश्यकताओं एवं भारतीय संस्कृति को समझने के लिए आज भारतीयता वैश्विक ब्राण्ड बन चुकी है। आज भारत में लगभग सभी नौकरियों में हिन्दी भाषा में परीक्षाएं देने, साक्षात्कार देने का प्रचलन बढ़ गया है।

भाषा, भावनाओं की वाहक होती है और भाषा ही हमारी विचार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और भाषा उसकी अस्मिता एवं अखण्डता की द्योतक है। लिहाजा हिन्दी भाषा ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो भारतीय जनमानस को एक-दूसरे से जोड़ने की अद्भुत क्षमता रखती है। ''हिन्दी दिवस'' मनाने की सार्थकता तभी साकार होगी जब हम सभी भारतवासी क्षेत्रीयता एवं प्रांतीयता की भावना से ऊपर उठकर राष्ट्रभाषा के उत्थान, विकास एवं प्रचार-प्रसार में अपना पूर्ण सहयोग और योगदान करें एवं अधिकाधिक कार्य हिन्दी भाषा में ही करें।

और अंत में हिंदी के लिए ---

खुली आँखों से देखता हूँ बस सपने तेरे ,
तेरी चाहत जन-जन में फैलाना चाहता हूँ।
संयुक्त राष्ट्र भाषा बनाने का मकसद समझ
विश्व पटल पर परचम फहराना चाहता हूँ।
जानता हूँ तेरी चाहत उड़ने की खुले गगन में
तेरे सपनों को बाज़ से सशक्त पंख देना चाहता हूँ।
मेरी चाहत, मेरा सपना, मेरा प्यार यही तो है
वेद ऋचाओं का सार दुनिया को बताना चाहता हूँ।
सभ्यता, संस्कृति, मानवता सब भारत की देन है
भारत को फिरसे विश्व गुरु बनाना चाहता हूँ।
संस्कृत को देव वाणी शास्त्रों में बताया गया
हिंदी की सरलता को विश्व भाषा बनाना चाहता हूँ।